प्रस्तावना

लक्ष्य ओ उद्देश्य

कल्याणी-कोश मैथिली भाषाक एक व्यावहारिक शब्दकोश थिक। ई मैथिल तथा मैथिलेतर दूनू वर्गक हेतु अभीष्ट अछि। तहिँ एहिमे शब्दक अर्थ मैथिली आ अङरेजी दूनू भाषामे देल गेल अछि आओर मूल शब्द नागरी आ रोमन दूनू लिपिमे देल गेल अछि। एहिमे निर्धारित लक्ष्य-सीमाक अन्तर्गत लगभग 40,000 (चालीस हजार) शब्द/पदबन्ध समाविष्ट अछि जे मैथिलीभाषी समाजक विभिन्न वर्गक लोकक वाग्व्यवहारसँ संगृहीत कएल गेल अछि। सङ्गहि मैथिली-साहित्यक ग्रन्थसभसँ सेहो शब्द बटोरल गेल अछि। विशेष ध्यान राखल गेल अछि एहन शब्द पर जे केवल मैथिलीमे अर्थ-विशेष आ रूप-विशेषक सङ्ग प्रचलित अछि। अबस्से एहन शब्दक संख्या बहुत नहि अछि। एहि कोशमे (अथवा आजुक कोनहु भारतीय भाषाक कोशमे) बहुत शब्द एहने भेटत जे रूपमे, उच्चारणमे वा अर्थमे अल्पमात्र स्थानीय भेदक सङ्ग भारतक अधिकतर भाषामे प्रचलित अछि।

मैथिलीमे जतेक क्षेत्रीय/आञ्चलिक अथवा औपभाषिक रूपवैविध्य अछि ततेक प्रायः आन कोनहु भाषामे कदाचिते भेटत। आजुक उदार सामाजिक विचारधारामे भाषाक कोनोटा क्षेत्रीय/आञ्चलिक, ग्राम्य वा औपभाषिक रूप 'अशुद्ध' वा 'अग्राह्य' नहि मानल जाइत अछि। तेँ उचित छल जे एहि कोशमे सकल शब्द आ ओकर सकल रूप-रूपान्तर समाविष्ट कएल जाइत। वास्तवमे एहि कोशमे एहन कतोक शब्द ओ रूप-रूपान्तर समाविष्टो कएल गेल अछि। परन्तु एहि व्यावहारिक शब्दकोशक सीमित कलेवरमे नै सभक समावेशे सम्भव छल आ ने सभक संग्रह करबाक साधने उपलब्ध छल। अतः विवशतावश एहिमे एहने शब्द आ रूपकेँ प्राग्रता देल गेल अछि जे कालक घात-प्रतिघात सहैत चिरकाल धरि समस्त मिथिलामे आ समस्त मैथिलीभाषी जन-समुदायमे प्रचलित आ बोधगम्य अछि आओर सामान्य बौद्धिक स्तरक सकल लोकक ठोरपर आबि सकैत अछि। हँ, मैथिलीक लिखित साहित्यसँ संगृहीत किछु शब्द एकर अपवाद थिक। एहन आपवादिक शब्दमे एक सङ्केत *cls* लगाए देल गेल अछि जे सूचित करैत अछि जे एकर प्रयोग केवल साहित्यमे होइत अछि, जनसाधारणक सामान्य वाग्व्यवहारमे नहि।

मैथिलीमे वर्तनी सेहो दीर्घ कालसँ विवादक विषय रहल अछि। कोनहु भाषाक कोश आ व्याकरणक एक दायित्व होइत छैक ओहि भाषाकेँ एक स्थिर स्वरूप प्रदान करब। तदनुसार एहि कोशमे वर्तनीक एकरूपता राखल गेल अछि आ तदर्थ एहन वर्तनी अपनाओल गेल अछि जे हमरा जनैत दीर्घतम कालसँ व्यापकतम क्षेत्रमे प्रचलित अछि।

गत कतोक दशकमे ज्ञान-विज्ञान, उद्योग-धन्धा, व्यापार, वाणिज्य, यातायात, दूर-सञ्चार आदि क्षेत्रमे तीव्र गतिएँ आश्चर्यजनक विकास भेल अछि। अवश्यमेव एकर व्यापक प्रभाव मैथिल जन-जीवन पर पड़ल अछि। परन्तु एहि क्रममे जे असंख्य नव-नव शब्द अखिल भारतीय स्तर पर स्वदेशमे विकसित भेल अछि आ विदेशसँ आएल अछि तकर समावेश एहि कोशमे नाममात्रे भेल अछि, कारण जे एहि विकासक्रममे मैथिली लगभग ओतहि पड़ल रहल जतए आइसँ सए वर्ष पूर्व छल। शब्दान्तरेँ कहि सकैत छी जे प्रस्तुत कोश मिथिलाक लगभग सए वर्षक पूर्वक जन-जीवनक स्थिति प्रतिफलित करैत अछि।

लक्ष्य ओ साधनक सीमार्के देखैत एहि शब्द-कोशर्के अधिकसँ अधिक ठोस बनएबाक प्रयास कएल गेल अछि आ तदर्थ व्युत्पादित आ सामासिक शब्द एहने राखल गेल अछि जाहिमे किछुओ अतिरिक्त अथंक व्यञ्जकता आएल होइक। तदनुसार *देखब* शब्द तँ राखल गेल किन्तु ओहिसँ बनल *देखल, देखाओल, देखनिहार, देखओनिहार* आदि शब्द व्याकरणक भरोसेँ छाड़ि देल गेल। एहिना *राज* शब्दसँ बनल सामासिक शब्द *राजकुल, राजगुरु, राजद्वार, राजभवन, राजमहल* इत्यादि, जकर सामासिक अर्थ दूनू पदहिसँ बोधगम्य भए जाइत अछि, छाड़ि देल गेल।

शब्दक अर्थ लिखबामे सांस्कृतिक सन्दर्भ स्पष्ट करबाक प्रयास कएल गेल अछि आओर यथासम्भव लाक्षणिक/परोक्ष अभिव्यञ्जना सेहो देखाओल गेल अछि। मैथिली व्याख्यामे आवश्यकतानुसार व्युत्पत्त्यर्थ सेहो देल गेल अछि जाहिसँ अर्थक विकासक्रम बुझबामे आबए; परन्तु अङरेजी व्याख्यामे व्युत्पत्त्यर्थ छाड़ि देल गेल अछि।

मैथिली भाषा : एक झलक

कल्याणी-कोश जाहि भाषाक थिक से *मैथिली* वा *मिथिला-भाषा* नामसँ विदित अछि। ई मुख्यतः भारतक उत्तर बिहारमे तथा अंशतः नेपाल तराइमे लगभग 28,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रमे बसनिहार लगभग 2,00,00,000 (दू कोटि) लोकक मातृभाषा थिक।

लगभग सोलहम शतक धरि मैथिली अपन क्षेत्र भरि आ ताहिसँ बाहरो बड़ उत्कृष्ट स्थितिमे छल। ई जनताक सर्वविध सामाजिक आ सांस्कृतिक व्यवहारक अनन्य माध्यम छल। एकरा मिथिलामे कर्णाट-राजवंश, ओइनिबार-राजवंश आओर खण्डवला-राजवंशक, नेपालमे मल्ल-राजवंशक आओर मोरङ्गमे सेन-राजवंशक मातृभाषा होएबाक सौभाग्य ओ प्रतिष्ठा प्राप्त छलैक। उक्त वंशसभक बहुतो राजालोकनि मैथिलीमे काव्य ओ नाटक लिखलनि ओ साहित्यकारलोकनिक सम्पोषण कएलनि। एतए ई बात विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि जे एहू शब्दकोशक प्रकाशन उक्त खण्डवला-राजवंशक अन्तिम नृपति महाराजाधिराज कामेश्वरसिंहक उदार सम्पोषणहिमे सम्भव भेल अछि। शताधिक वर्ष धरि मैथिली नेपाल, असम, बङ्गाल, ओड़ीसा आओर दक्षिण-पूर्व बिहारक विशाल भूभागमे सम्पर्क-भाषाक रूपमे प्रचलित रहल आओर उक्त क्षेत्रमे वैष्णव(कृष्णभक्ति)सम्प्रदायक सन्देश-वाहिका रहल।

साहित्य-सर्जनामे मैथिली पड़ोसी भाषासभसँ बहुत आगाँ छल आ एकर साहित्यिक उत्कर्ष चौदहम शताब्धिअहिमे महाकवि विद्यापतिक प्रसादेँ अकास ठेँकि गेल छल, आ से क्रम तदुत्तरकालहुमे कतोक शतक धरि प्रवर्तमान रहल।

सतरहम शतक अबितहिँ मैथिली पतनोन्मुख भए गेल। खास मिथिलामे प्रशासनसम्बन्धी काजमे मैथिलीक स्थानमे फारसी आबि गेल। नेपाल आ मोरङ्गमे गोरखा-राज स्थापित होइतहिँ नेपाली भाषा मैथिलीकेँ दबाए देलक। अङरेजी राज स्थापित भेलापर फारसीक जगह अङरेजी लेलक। सम्प्रति देशी सरकारक छत्रच्छायामे प्रशासन, शिक्षा ओ जनसम्पर्क सकल क्षेत्रमे हिन्दीक साम्राज्य अछि। एहनो विषम परिस्थितिमे मैथिली भाषा जीवन्त अछि आ अपन अतीत उत्कर्ष पुनः प्राप्त करबाक हेतु सङ्घर्षरत अछि। प्रस्तुत शब्दकोशक प्रकाशन एही अभियानक एक नमहर डेग थिक।

भाषाशास्त्रक अनुसार मैथिली नव्य भारतीय आर्य भाषासभक प्राच्य-समूहक एक भाषा थिक, जेना असमिआ, बङला आओर ओड़िआ। प्राच्य ओ मध्यदेशीय भाषासभक बीचमे पड़बाक फलस्वरूप मैथिलीमे दूनू समूहक किछु-किछु गुण-धर्म छैक; विशेषतः शब्दावलीक क्षेत्रमे। ई सभ साम्य रहितहुँ मैथिलीमे एहन

बहुतरास स्वीय वैशिष्ट्य छैक जे एकरा हिन्दी, बङला आदि जकाँ एक सर्वथा स्वतन्त्र भाषा सिद्ध करैत अछि। बेसी व्याख्याक आवश्यकता नहि, एकर एकमात्र वैशिष्ट्य बहुकारकान्वयी क्रियापद-प्रणाली (Rule of Verb-Nominal Agreement) एकरा सर्वथा स्वतन्त्र सिद्ध कए दैत अछि, किएक तँ ई वैशिष्ट्य भारतक आन कोनहु आर्यभाषामे नहि पाओल गेल अछि। डॉ॰ सुभद्र झा एहि वैशिष्ट्यक प्रसङ्ग लिखैत छथि :

> मैथिलीक क्रियापद-रूपावली परम जटिल अछि। एकर दू कारण—पहिल ई जे एहिमे कर्तृगत आदर-अनादरक विवक्षानुसार क्रियापदक रूप बदलैत अछि, आ दोसर ई जे क्रियापदक रूप कर्ता ओ कर्मक पुरुषक अनुसार तँ बदलितहिँ अछि, करण, अधिकरण, सम्बन्ध इत्यादि आनो कारकसभक पुरुषक अनुसार बदलैत अछि। आओर स्पष्ट रूपेँ कहल जाए सकैत अछि जे वाक्यमे क्रियापदक कोन रूप उपयुक्त होएत तकर निर्धारण केवल कर्तेक पुरुष देखि नहि, अपितु कर्तासँ सम्बद्ध संज्ञा ओ सर्वनाम तकरो पुरुषकेँ देखि करए पड़ैत अछि। [*दि फार्मेशन ऑफ दि मैथिली लैंगुएज*, पृष्ठ 469]
>
> [Maithili conjugation has been said to be very very complex. It is due to two reasons : (i) on account of employment of different sets of verbal forms with reference to the subjects with the honorific sense associated with them; (ii) on account of such a verb being affected not only by the person of the subject and object but also by the person of the instrument, location, relation etc. To speak more accurately an appropriate verbal form required for use in a sentence is determined not only by the person of the subject but also by that of the noun or pronoun related to the subject. (*The Formation of the Maithili Language*, p. 469)]

एक अन्य प्रख्यात भाषाशास्त्री एस॰ एच॰ केलॉग उपर्युक्त वैशिष्ट्यक वर्णन एहि प्रकारेँ कएने छथि :

> मैथिलीकेँ एहि व्याकरणमे निरूपित अन्य सकल विभाषासभसँ जे पृथक् करैत अछि से थिक एकर क्रियापद-रूपावलीक असाधारण बाहुल्य। सारणीसभमे तँ किछुए लकारक रूपावली पूर्णतः देखाओल गेल अछि, परन्तु एहि (मैथिली)मे ओ सकल लकार अछि जे खड़ी बोली हिन्दीमे पाओल जाइत अछि, आओर प्रत्येक लकारमे रूपावलीक अपार राशि प्रचलित अछि, जे बात आन कोनहु विभाषामे नहि पाओल जाइत अछि। [*ए ग्रामर ऑफ दि हिन्दी लैंगुएज*, पृष्ठ 332]
>
> [The Maithili ..... is distinguished from all the dialects exhibited in this Grammar by the extraordinary exuberance of its verbal forms. Although only a part of the tenses are exhibited in full in the tables, it possesses all the tenses which are found in High Hindi, and each of these uses a bewildering variety of diverse forms, equalled in no other dialect. (*A Grammar of the Hindi Language*, p. 332)]

ई वैशिष्ट्य उदाहरणद्वारा सरलतासँ स्पष्ट कएल जाए सकैत अछि। अङरेजीक एक सरल वाक्य He went लेल जाए। मैथिलीमे प्रसङ्गानुसार एकर अनुवाद सात रूपमे कएल जाए सकैत अछि :

(i) ओ गेल। (ii) ओ गेलैक। (iii) ओ गेलहु। (iv) ओ गेलनि।
(v) ओ गेलाह। (vi) ओ गेलथिन। (vii) ओ गेलथुन।

ध्वन्यात्मक परिवर्तनक नव प्रवृत्ति

हालमे मैथिलीमे किछु विचित्र प्रकारक ध्वन्यात्मक परिवर्तन आएल अछि जे सम्प्रति केवल मौखिक व्यवहारमे देखल जाइत अछि। एहन किछु महत्वपूर्ण परिवर्तनक चर्चा एतए कएल जाइत अछि, कारण एहिसँ प्रस्तुत कोशक व्यवहर्ता लोकक मुहेँ सुनल एहन शब्दसभकेँ चीन्हि सकताह जे एहि प्रकारक ध्वनिपरिवर्तनक कारणेँ हुनका अनभुआर-सन लगतनि। उदाहरणार्थ ओ बूझि सकताह जे **सैन** आ **रैब** वस्तुतः **शनि** आ **रवि** शब्दक मौखिक रूपान्तर थिक।

1. *अ* ध्वनिक लोप—*अ* ध्वनि दुर्बल स्थानमे पड़लापर द्रुत उच्चारणमे लुप्त कए देल जाइत अछि। उदाहरण—*अगहन : अग्हन्; अजगर : अज्गर्; गमछा : गम्छा* इत्यादि। एहि प्रकारक ध्वनिलोप प्रस्तुत कोशमे प्रदर्शित उच्चारणमे सर्वत्र कए देल गेल अछि, जेना अगहन ag-han इत्यादि। एहि विषयमे यथार्थ स्थितिक चित्रण ए॰ आइ॰ डेविस निम्न रूपेँ कएने छथि :

> एहन अवधारणा अछि जे मैथिलीमे सभ शब्द स्वरान्त होइत अछि। देवनागरी लिपि, जाहिमे सम्प्रति मैथिली लिखल जाइत अछि, एहि अवधारणाक पुष्टि करैत अछि, कारण जे एहि लिपिक प्रत्येक व्यञ्जनमे स्वरध्वनि अन्तर्निहित रहैत अछि। ····आजुक मौखिक मैथिलीमे ई अन्तर्निहित अन्तिम स्वर लुप्त भए गेल अछि। तैओ सम्भ्रान्त आ विलम्बित भाषणमे ई अकार अवश्य सुनि पड़त। शब्दक बीचमे ई स्वर ध्वनि सामान्यतः लुप्त कएल जाइत अछि। किन्तु इहो विलम्बित उच्चारणमे स्पष्ट सुनल जाइत अछि। [*बेसिक कलक्विअल मैथिली*, पृ॰ xii-xiii.]

2. इ आओर उ केर पाछु घुसकब—शब्दक अन्तमे पड़निहार इ आओर उ किछु स्थितिमे अपन पूर्ववर्ती व्यञ्जनकेँ टपि एक डेग पाछु घुसुकि जाइत अछि। यथा :

मानक रूप—	*अछि*	*रवि*	*काल्हि*	*मासु*	*बालु*
विकृत उच्चारण—	*ऐछ*	*रैब*	*काइल्ह*	*माउस*	*बाउल*

एहि कोशमे ई विकृत उच्चारण मानक उच्चारणक सङ्ग यत्र-तत्र देखाओल गेल अछि।

3. *आ* केर लघूकरण—*आ* केर स्थानमे *अ* होएब मैथिलीक ध्वन्यात्मक संरचनामे बड़ महत्वपूर्ण अछि। कखनहु तँ ई विशुद्ध ध्वन्यात्मक परिवर्तन थिक, जेना :

मानक रूप—	*काका*	*मामा*	*पानबाला*
विकृत रूप—	*कका*	*ममा*	*पानबला*

परन्तु अधिक ठाम संरचनामूलके देखल जाइत अछि, जेना :

मानक रूप—	*आङन*	*कापड़*	*आरब*	*ठाकुर*
रूपान्तर—	*अङना*	*कपड़ा*	*अरबा*	*ठकुराइनि*

ई परिवर्तन उपान्त्यपूर्व-लघुता-नियम केर परिणाम थिक जे मैथिलीमे सर्वत्र लागू होइत अछि आ एकर ध्वन्यात्मक आकृतिक नियामक होइत अछि। एहि नियमक अनुसार मैथिलीक शब्दमे दीर्घ स्वर केवल अन्त वा उपान्तमे (अर्थात् अन्तसँ पहिल वा दोसर स्थानमे) रहि सकैत अछि, आ ताहिसँ भिन्न सभ स्वर ह्रस्व भए जाइत अछि। एतए मुख्यतः एतबे कहबाक अछि जे *अ* आओर *आकेँ* बहुधा एक दोसराक रूपान्तर बूझल जाए। ज्ञातव्य जे ई ध्वनि-नियम नब प्रवृत्तिक उदाहरण नहि थिक, परन्तु एकर पालन अन्तिम स्वरकेँ दीर्घ करबाक नब प्रवृत्तिक क्रममे नियमतः होइत अछि (उदाहरण आगाँ देखल जाए)।

4. अन्तिम स्वरक दीर्घीकरण—प्रायः पश्चिम दिसक प्रभावसँ मैथिलीक बहुतो ह्रस्वान्त शब्द नब प्रवृत्तिमे दीर्घान्त भए गेल अछि। जेना :

प्राचीन रूप—	*आङन*	*कापड़*	*माड़ब*	*माकड़ (अ > आ)*
नवीन रूप—	*अङना*	*कपड़ा*	*मड़बा*	*मकड़ा*
प्राचीन रूप—	*डोरि*	*चोरि*	*तेलि*	*चौधरि (इ > ई)*
नवीन रूप—	*डोरी*	*चोरी*	*तेली*	*चौधरी*
प्राचीन रूप—	*बालु*	*नेरु*	*हमरा-आरु*	*चलु (उ > ऊ)*
नवीन रूप—	*बालू*	*नेरू*	*हमरा-आरू*	*चलू*

5. इ आओर उ स्वरक लोप—लघु इ आओर उ स्वर (लघु *अ* जकाँ) दुर्बल स्थानमे विशेषतः शब्दक अन्तमे लुप्त कए देल जाइत अछि। जेना :

मानक रूप— *धोबिनि देखिकेँ चिन्हि गेलि आ चलि गेलि।*

नब प्रवृत्तिमे— *धोबिन देखके चिन्ह गेल आ चल गेल।*

मानक—	*कछिनी*	*लड़िकौरी*	*समुझब*	*हिडुला*	*मुसुकाएब*
नवीन—	*कछनी*	*लड़कौरी*	*समझब*	*हिड़ला*	*मुसकाएब*

6. स्वरध्वनि-समामेलन—मैथिलीमे स्वर-सङ्घात अर्थात् लगातार अनेक स्वरध्वनिक एकत्र आएब आइओ धरि प्रचलित अछि, जेना *आइए अओताह* इत्यादि। परन्तु नवीन प्रवृत्ति स्वर-सङ्घातकेँ तोड़बा पर अछि। प्राचीन मैथिलीक *अइ/अउ* सर्वत्र लेखमे *ऐ/औ* रूप ग्रहण कए चुकल अछि आ उच्चारणो एकर एकस्वरिक (monosyllabic) भए गेल अछि। परन्तु *अए/आए* तथा *अओ/आओ* जे आइओ ओही रैखिक रूप आ भाषिक उच्चारणमे प्रचलित अछि, हालमे समामेलित कए अङरेजीक match/thought क स्वरध्वनि-जकाँ एकस्वरिक उच्चरित होअए लागल अछि। एहि नव-विकसित दूनू ध्वनिक हेतु जेँ भारतीय वर्णमालामे कोनो प्रतीक नहि छैक तेँ परम्परानुवर्ती लेखकलोकनि एकरा हेतु पूर्ववत् *अए/आए* तथा *अओ/आओ* लिखैत रहलाह। परन्तु किछु नब प्रवृत्तिक लोक एहू दूनू स्वरध्वनिक हेतु *ऐ/औ* इएह दूनू वर्ण चलओलनि। फलतः ऐ तीन प्रकारक ध्वनिक सूचक भए गेल—*अइ, अए* तथा *आए*; तहिना *औ* सेहो तीन ध्वनिक प्रतीक बनाए देल गेल—*अउ, अओ* तथा *आओ*। उदाहरण :

ऐहब "अविधवा" (अइहब) *औखध* "औषध" (अउखध)
ऐलाह "पहुँचलाह" (अएलाह) *औताह* "पहुँचताह" (अओताह)
ऐल "पहुँचल" (आएल) *और* "अपरञ्च" (आओर)

7. अन्यान्य विविध परिवर्तन—उपर्युक्त ध्वन्यात्मक परिवर्तनक अतिरिक्त, किछु आओर छिट-फुट परिवर्तनसभ किछु मौखिक व्यवहारमे आ किछु लेखमे सेहो देखि पड़ैत अछि। यथा,

	प्राचीन	नवीन
(क) वर्तमान कृदन्तमे *त* केर लोप—	*करैत छथि*	*करै छथि।*
(ख) *ह* ध्वनिक लोप—	*नहि गेलाह*	*नइ गेला।*
(ग) *ध* आओर *भ* केर विच्छेदन—	*आधा, सभक*	*अदहा, सबहक।*
(घ) *ङ* तथा *न्ह* केर सरलीकरण—	*रङ्ग, छन्हि*	*रङ, छनि।*
(ङ) पञ्चम वर्णकेँ अनुस्वार बनाएब—	*अङ्क, अङ्ग*	*अंक, अंग।*

लिपि

मैथिलीकेँ अपन लिपि छैक जे *तिरहुता* वा *मिथिलाक्षर* नामेँ विदित अछि। परन्तु आब मुद्रणमे सुविधार्थ नागरी लिपि अपनाए लेल गेल अछि। हमरालोकनि चाहैत रही जे एहि कोशमे नागरीक सङ्ग-सङ्ग मिथिलाक्षरमे सेहो मूल शब्द रहए, परन्तु कम्प्यूटर-सुविधाक अभावमे से नहि भए सकल। ज्ञातव्य जे मिथिलामे वर्तमान शतकसँ पूर्वक जतेक जे पोथी आ अभिलेख भेटैत अछि से सभटा तिरहुता लिपिमे अछि, आ तेँ मिथिलाक संस्कृति ओ इतिहासमे रुचि रखनिहार प्रत्येक व्यक्तिकेँ मिथिलाक्षर जानब आवश्यक। एहन व्यक्तिकेँ एहिना नेवारी लिपि जानब सेहो आवश्यक, किएक तँ एहि लिपिमे लिखल मैथिली-साहित्यक बहुतो पाण्डुलिपि नेपालक पुस्तकालयसभमे सुरक्षित अछि। आब ई दूनू लिपि अपन स्थान नागरीकेँ दए देलक; अतः नागरी मैथिलीक तेसर लिपि भेल। एहि तीनू लिपिक नमूना रोमन प्रतिरूपक सङ्ग पृष्ठ 00 पर देल गेल अछि। एहिसँ आशा जे प्रस्तुत कोशमे तिरहुताक प्रयोग नहि कए सकबाक त्रुटि किछु-ने-किछु निराकृत होएत।

स्रोत ओ पारम्परिक अवदान

एहि *कल्याणी-कोशक* सङ्कलनमे यथोपलब्ध सकल स्रोतसँ सामग्रीक सङ्ग्रह कएल गेल अछि। मौखिक स्रोतक प्रसङ्ग निवेदन जे साधनक अभावमे शब्द-सङ्ग्रह हेतु जन-सम्पर्क वा फील्डवर्क नहि कएल जाए सकल। शुद्धताक जाँच सेहो निकटवर्ती दुइ-चारि व्यक्तिसँ पूछि-पूछि अपनहिमे कए लेलहुँ, आ विशेषतः अपने ज्ञान पर आश्रित रहलहुँ। एतबा अवश्य जे पूर्वमे जतबा जे जन-सम्पर्क वा फील्डवर्क महावैयाकरण दीनबन्धु झा, जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ओ ए॰ आइ॰ डेभिस अपन-अपन कृतिक सङ्कलनक क्रममे कएने छथि ताहिसँ पूरा लाभ उठाओल गेल अछि।

अधिकतर सामग्री लिखित स्रोतसँ सञ्चित कएल गेल अछि, जेना विविध विद्वान्द्वारा सङ्कलित पूर्ण/अपूर्ण शब्दावली, शब्दसूची, मैथिली-ग्रन्थक अन्तमे देल गेल शब्दानुक्रमणी आदि। कतोक अन्य भाषाक शब्दकोशमे मूल भाषाक शब्दक मैथिली प्रतिरूप/पर्याय सेहो देल गेल अछि। एहि प्रकारक किछुए शब्दकोशक पूर्णतः उपयोग कएल जाए सकल। एहि प्रकारक भाषान्तर-कोशमे सभसँ उपर अछि एस॰ डब्ल्यू॰ फैलनद्वारा सङ्कलित ए *न्यू हिन्दुस्तानी इंगलिश डिक्शनरी* (ग्रन्थसूची 1879)। फैलन साहेब सम्भवतः पहिल व्यक्ति थिकाह जे कोनो आन भाषाक शब्दकोशमे मैथिलीकेँ स्थान देलनि। हिनक ई अनुपम कृति सर्वप्रथम 1879 ई॰मे प्रकाशित भेल, आओर अबस्से एकर सङ्कलन कमसँ कम ओहिसँ दस वर्ष पूर्व आरम्भ भेल होएत। फैलन साहेब एहि भाषाकेँ *तिरहुती* (संकेत Tr) कहल अछि। सम्भवतः ताधरि एहि भाषाक नाम 'मैथिली' प्रचलित नहि भेल हो। ई मिस्टर वैटलिंग नामक एक व्यक्तिक प्रति कृतज्ञता प्रकट कएलनि अछि आ हुनका "हेडमास्टर ऑफ दरबङ्गा (हुनक वर्तनी Darbangah) स्कूल" कहलनि। एहिसँ अनुमान कएल जाए सकैत अछि जे इएह महानुभाव फैलन साहेबकेँ मैथिलीक शब्द उपलब्ध करओने होएथिन। जेँ ई *हिन्दुस्तानी डिक्शनरी* फारसी लिपिमे अलिफ-बे-पे वर्णक्रममे निबद्ध अछि तेँ एखन धरि एहि परमोपादेय शब्दकोश पर मैथिली-प्रेमीक दृष्टि प्रायः नहि पड़ल। अस्तु, नहि एतेक दिन तँ आइ हम मैथिलीक कोशाभिलेखनक दिशामे अग्रणी एहि दूनू महानुभावक प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करैत छी।

मैथिलीक कोशाभिलेखनसम्बन्धी कृतिसभक सूची (पृष्ठ 693) देखलासँ स्पष्ट होएत जे शब्दकोशाभिलेखनमे मैथिली अपन पड़ोसी भाषासभसँ बहुत पछुआएल अछि। गत शतकक अन्त भागमे क्रिश्चिअन मिशनसभ, जे भारतक विभिन्न भागमे सक्रिय छल, विविध आधुनिक भारतीय भाषासभक

मोट-मोट शब्दकोश प्रस्तुत कएलक, परन्तु मैथिली ताहिसँ वञ्चित रहि गेल। कहल जाइत अछि जे सेरामपुर मिशनक पूजनीय विलियम केरी, जे 1793 मे भारत अएलाह, मैथिली शब्दकोश बनाएब आरम्भ कएलनि, किन्तु हुनक प्रयास प्रायः सफल नहि भेल। एहि क्षेत्रमे ग्रिअर्सन साहेबक योगदान (ग्रन्थसूची, 1882, 1884, 1885) गुण ओ मात्रा दूनूमे अबस्से परम प्रशंसनीय अछि, परन्तु हिनक सङ्गृहीत शब्दसभ एक ठाम सुविन्यस्त नहि होएबाक कारणें शब्दकोश नहि भए विभिन्न ग्रन्थक परिशिष्टमे समाविष्ट शब्दानुक्रमणी, शब्दसूची आदि रूपमे आओर जनजीवनक वर्णनक्रममे छिड़िआएल अछि। निश्चय ओ अपन सङ्गृहीत शब्दसभकेँ एकत्र कए शब्दकोशक रूप देबाक प्रयास कएलनि आ होएर्नले साहेबकेँ सङ्ग कए दू खण्ड प्रकाशितो कएलनि (ग्रन्थसूची, 1885, 1889), परन्तु आगाँ नहि बढ़ि सकलाह। दोसर बात जे 'बिहारी' नामक भाषाक आग्रही होएबाक कारणें बहुतो कृतिमे मैथिलीक सङ्ग मगही आ भोजपुरी तकरहु मिझर करैत गेलाह।

अन्यान्य भाषाक शब्दकोशमे मैथिलीक शब्दराशिकेँ समाविष्ट करबाक काज जे फैलन साहेब आरम्भ कएलनि तकर अनुसरण अनेक शब्दकोशमे कएल गेल। टर्नर साहेबक नेपाली डिक्शनरी (ग्रन्थ-सूची, 1931) तथा हरिचरण वन्ध्योपाध्यायक *वङ्गीय शब्दकोश* एकर नीक उदाहरण अछि।

महामहोपाध्याय डॉ॰ उमेश मिश्र, डॉ॰ सुभद्र झा, डॉ॰ रामदेव झा, डॉ॰ शशिनाथ झा आदि कतोक मैथिल विद्वान्लोकनि मध्यकालीन मिथिलामे संस्कृत भाषामे लिखल गेल कतोक ग्रन्थसभसँ मैथिलीक कतोक प्राचीन शब्द छनलनि। एहन शब्द अधिकतर गाछ-बिरिछ आ पशुपक्षीक नाम थिक आ विशेषतः संस्कृतक परम प्रसिद्ध शब्दकोश अमरसिंहकृत *नामलिङ्गानुशासन* (लगभग छठम-सातम शतक) केर विविध संस्कृत ओ मैथिली टीकासभमे आएल अछि। एहि टीकासभमे सभसँ पुरान अछि सर्वानन्दकृत टीका (ग्रन्थसूची, 1940) जे दसम शतकमे लिखल गेल। पण्डित मुकुन्द झाक लिखल मैथिली टीका (ग्रन्थसूची, 1924) प्रस्तुत कल्याणी-कोशक सङ्कलनमे विशेष उपयोगी भेल अछि।

मैथिली कोशाभिलेखनमे नेपालक योगदान किछु भिन्न प्रकारक अछि। *बेसिक कलक्विअल मैथिली* (ग्रन्थसूची, 1984[2]) अपन प्रकारक सर्वप्रथम आ परम उत्कृष्ट कृति थिक। ई अङरेजी वा नेपाली भाषाक माध्यमसँ मैथिली सिखनिहारक हेतु लिखल गेल अछि। तेँ एहिमे एक सङ्क्षिप्त शब्दकोश मैथिलीसँ नेपाली आ अङरेजी, नेपालीसँ मैथिली, तथा अङरेजीसँ मैथिली तीन क्रममे देल गेल अछि। प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक *पर्यायवाची शब्दकोश* (ग्रन्थसूची, 1974) नेपालमे प्रचलित सभ भाषाक, जाहिमे मैथिली सेहो समाविष्ट अछि, समेकित शब्दकोश थिक। एहि प्रकारक बहुभाषी शब्दकोश बड़ विरल भेटत, जाहिमे प्रत्येक भाषाक शब्दक पर्याय प्रत्येक भाषामे प्राप्त करबाक अद्भुत आयोजना अछि। जेनिफर विलिअम्सद्वारा सङ्कलित *मैथिली वर्ड लिस्टक* केवल भाषावैज्ञानिक महत्व अछि।

एतए धरि जाहि कृतिसभक चर्चा कएल अछि ताहिमे एकोटा शुद्ध अर्थमे मैथिली-शब्दकोश नहि कहाए सकैत अछि। मैथिली-शब्दकोश सङ्कलित करबाक पहिल प्रयास लगभग 1905 ई॰मे पण्डित भवनाथ मिश्र कएलनि। दुर्भाग्यवश एहि विस्तृत शब्दकोशक किछुए पृष्ठ *मिथिला-शब्द-प्रकाश* नामसँ 1914 ई॰मे छपल। एहिमे तीन भाषा अछि, अर्थात् मैथिली शब्दक पर्याय हिन्दी आ संस्कृतमे देल गेल अछि।

डॉ॰ जयकान्त मिश्रद्वारा सङ्कलित *बृहत् मैथिली शब्दकोश* केर केवल दू खण्ड ('अ' सँ 'औ') एखन धरि बहराएल अछि। एकर प्रकाशन इण्डिअन इन्स्टिच्यूट ऑफ एडभान्स्ड स्टडीज, सिमला द्वारा भए रहल अछि। ई कोश कोश-रचनाक आधुनिक वैज्ञानिक सरणिपर विशाल स्तर पर आयोजित अछि आ एकर

प्रत्येक शब्द ओ प्रत्येक अर्थ निर्देश-सहित उद्धरण द्वारा प्रमाणीकृत अछि। अर्थ मैथिली आ अङरेजी दूनू भाषामे अछि तथा मूल शब्द तिरहुता, नागरी आ रोमन तीनू लिपिमे देल गेल अछि।

मैथिलीमे सम्प्रति केवल चारि गोट शब्दकोश सम्पूर्णतः प्रकाशित अछि :

(i) *मिथिला-भाषा-कोश* (ग्रन्थसूची, 1950)—सङ्कलनकर्ता महावैयाकरण दीनबन्धु झा। एहिमे न्यूनाधिक 15,000 शब्द अछि। सङ्कलनकर्ता जनसामान्यमे अप्रचलित संस्कृत शब्द जानि-बूझिकेँ छाँटि देलनि अछि। अर्थ संस्कृतनिष्ठ मैथिलीमे देल गेल अछि जाहिसँ प्रदेशान्तरहुक लोककेँ बोधगम्य हो।

(ii) *मैथिली शब्दकोश* (ग्रन्थसूची, 1992)—सङ्कलनकर्ता गोविन्द झा। एहिमे सभ प्रकारक न्यूनाधिक 35,000 शब्द सरल मैथिलीमे अर्थक सङ्ग अछि।

(iii) *मैथिली-शब्द-कल्पद्रुम* (ग्रन्थसूची, 1997)—सङ्कलनकर्ता पण्डित मतिनाथ मिश्र 'मतङ्ग'। एहिमे न्यूनाधिक 25,000 शब्द मैथिलीमे अर्थक सङ्ग अछि। बहुतो नव-नव शब्दक खोज एकर गौरव बढ़बैत अछि।

(iv) *अङ्गिका-हिन्दी-शब्दकोश* (ग्रन्थसूची, 1997[2])—सङ्कलयिता डॉ॰ डोमन साहु 'समीर'। एहिमे अङ्गभूमि(पूर्व बिहार)मे प्रचलित लगभग 8,000 शब्द हिन्दीमे व्याख्याक सङ्ग अछि।

विश्वविख्यात संस्कृत-कोशकार सर मोनिअर-मोनिअर विलिअम्स कहने छथि :

> कोनो शब्दकोशक सङ्कलयिता ई दावी कदाचिते सिद्ध कए सकैत छथि जे ओहि कोशमे सङ्कलित शब्द आ अर्थपर हुनक अनन्य स्वत्व छनि। [*संस्कृत इङलिश डिक्शनरी*, (भूमिका), पृ॰ v.]

एही महामनीषीक मतक अनुसरण करैत एहि उपर्युक्त कृतिसभमे जतेक जे सामग्री उपयुक्त बूझि पड़ल से सभटा एहि *कल्याणी-कोश*मे समाविष्ट कए लेल अछि। अवश्यमेव एहि लेल हम अपनाकेँ उक्त कृतीलोकनिक ऋणी मानैत छी आ हुनकालोकनिक प्रति कृतज्ञता प्रकाश करैत छी।

जन-सम्पर्क-सुविधाक अभावमे एहि सङ्कलनकार्यमे मैथिली साहित्यक पुस्तकेसभ सूचनाक सर्वोत्तम साधन रहल अछि। परन्तु एकरो मथन कोनो सुव्यवस्थित विधिएँ नहि कएल जाए सकल; यत्र-तत्रसँ जेना-तेना ताकि-हेरि किछु बटोरि लेल, कारण जे कोनो वैज्ञानिक वा रीतिबद्ध मार्गक अवलम्बन करब दुर्वह बुझाएल। तथापि लिखित साहित्य एहि कार्यमे प्रायः सर्वोत्कृष्ट स्रोत सिद्ध भेल अछि। साहित्यिक स्रोतमे आदिम मैथिली (*चर्यापद, दोहाकोश, कीर्तिलता* आदि) जानि-बूझिकेँ छाड़ि देल गेल अछि, किएक तँ ताहिसँ भाषाक समरसता भङ्ग होइत।